

International Multidisciplinary Research Journal

Golden Research Thoughts

Chief Editor
Dr.Tukaram Narayan Shinde

Publisher
Mrs.Laxmi Ashok Yakkaldevi

Associate Editor
Dr.Rajani Dalvi

Honorary
Mr.Ashok Yakkaldevi

Golden Research Thoughts Journal is a multidisciplinary research journal, published monthly in English, Hindi & Marathi Language. All research papers submitted to the journal will be double - blind peer reviewed referred by members of the editorial board. Readers will include investigator in universities, research institutes government and industry with research interest in the general subjects.

Regional Editor

Manichander Thammishetty

Ph.d Research Scholar, Faculty of Education IASE, Osmania University, Hyderabad

International Advisory Board

Kamani Perera Regional Center For Strategic Studies, Sri Lanka	Mohammad Hailat Dept. of Mathematical Sciences, University of South Carolina Aiken	Hasan Bakfir English Language and Literature Department, Kayseri
Janaki Sinnasamy Librarian, University of Malaya	Abdullah Sabbagh Engineering Studies, Sydney	Ghayoor Abbas Chotana Dept of Chemistry, Lahore University of Management Sciences[PK]
Romona Mihaila Spiru Haret University, Romania	Ecaterina Patrascu Spiru Haret University, Bucharest	Anna Maria Constantinovici AL. I. Cuza University, Romania
Delia Serbescu Spiru Haret University, Bucharest, Romania	Loredana Bosca Spiru Haret University, Romania	Ilie Pinteau, Spiru Haret University, Romania
Anurag Misra DBS College, Kanpur	Fabricio Moraes de Almeida Federal University of Rondonia, Brazil	Xiaohua Yang PhD, USA
Titus PopPhD, Partium Christian University, Oradea,Romania	George - Calin SERITAN Faculty of Philosophy and Socio-Political Sciences Al. I. Cuza University, IasiMore

Editorial Board

Pratap Vyamktrao Naikwade ASP College Devrukh,Ratnagiri,MS India Ex - VC. Solapur University, Solapur	Iresh Swami S. D. M. Degree College, Honavar, Karnataka	Rajendra Shendge Director, B.C.U.D. Solapur University, Solapur
R. R. Patil Head Geology Department Solapur University,Solapur	N.S. Dhaygude Ex. Prin. Dayanand College, Solapur	R. R. Yalikal Director Managment Institute, Solapur
Rama Bhosale Prin. and Jt. Director Higher Education, Panvel	Narendra Kadu Jt. Director Higher Education, Pune	Umesh Rajderkar Head Humanities & Social Science YCMOU,Nashik
Salve R. N. Department of Sociology, Shivaji University,Kolhapur	K. M. Bhandarkar Praful Patel College of Education, Gondia	S. R. Pandya Head Education Dept. Mumbai University, Mumbai
Govind P. Shinde Bharati Vidyapeeth School of Distance Education Center, Navi Mumbai	Sonal Singh Vikram University, Ujjain	Alka Darshan Shrivastava Shaskiya Snatkottar Mahavidyalaya, Dhar
Chakane Sanjay Dnyaneshwar Arts, Science & Commerce College, Indapur, Pune	G. P. Patankar S. D. M. Degree College, Honavar, Karnataka	Rahul Shriram Sudke Devi Ahilya Vishwavidyalaya, Indore
Awadhesh Kumar Shirotriya Secretary,Play India Play,Meerut(U.P.)	Maj. S. Bakhtiar Choudhary Director,Hyderabad AP India.	S.KANNAN Annamalai University,TN
	S.Parvathi Devi Ph.D.-University of Allahabad	Satish Kumar Kalhotra Maulana Azad National Urdu University
	Sonal Singh, Vikram University, Ujjain	

Golden Research Thoughts

International Recognition Multidisciplinary Research Journal

ISSN: 2231-5063

Impact Factor : 3.4052(UIF)

Volume - 5 | Issue - 9 | March - 2016



कौसल्या बैसन्त्री की आत्मकथा 'दोहरा अभिशाप'
में चित्रित शैक्षिक संघर्ष



प्राजक्ता प्रकाश जोशी

हिंदी विभाग प्रमुख, ए.आर. बुर्ला महिला वरिष्ठ महाविद्यालय, सोलापूर.

प्रस्तावना

आचार्य रामचंद्र शुक्ल ने आधुनिक काल को 'गद्यकाल' के नाम से अभिहित किया है। सामान्यतः आत्मकथा विधा अन्य गद्य - विधाओं की तरह हिंदी साहित्य के लिए आधुनिक काल की उपज है। हिंदी में 'आत्मकथा' विधा का उदय पाश्चात्य साहित्य के प्रत्यक्ष या परोक्ष भाव का ही परिणाम माना जाता है। 'आत्मकथा' मूलतः अंग्रेजी शब्द 'ऑटोबायोग्रैफी' (Autobiography) से बना हुआ है। संस्कृत में 'आत्मवृत्तकथनम्' और 'आत्मकचरितम्' शब्द अवश्य मिलते हैं जो आत्मकथा के अर्थ में स्वीकृत शब्द हैं। ऑटोबायोग्रैफी के लिए हिंदी में अनेक शब्द मिलते हैं जैसे आत्मकथा, आत्मवृत्त, आत्मगाथा, आत्मचरित, आत्मचरित्र - चित्रण, स्व-कथा, आत्म-जीवनी, आत्मवृत्तांत, आत्मचरित रचना, आत्मचरित जीवन, आत्मनेपद, आत्मकहानी, आपबीती, मेरी कहानी, रामकहानी, अपनी कहानी, जीवनयात्रा, अपनी खबर, जीवन कहानी आदि। इन सभी शब्दों के प्रयोग के बावजूद ऑटोबायोग्रैफी के अनुवाद रूप में 'आत्मकथा' शब्द ही अधिक व्यापक और स्वीकृत हुआ है। 'बृहत हिंदीकोश' में आत्मकथा शब्द का विग्रह अर्थात् आत्म और कथा को अलग-अलग लिया गया है। (आत्मन + कथा) आत्मकथा आत्मन का समास में व्यवहृत रूप है जिसका अर्थ है अपना निज का, आत्मा का, मन का, कथा का अर्थ होता है कहानी। अतः आत्मकथा का अर्थ हुआ 'स्वलिखित जीवन कला'।

आत्मकथा संबंधी विभिन्न विद्वानों ने विभिन्न मत दिये हैं। मुंशी प्रेमचंद ने आत्मकथा को 'अपने हृदय पट को अपनी टोकरी को, अपनी हारों को प्रकट करना कहा; तब यह भी कहा कि उसके माध्यम से एक आदमी अपने जीवन के तत्व सामने रखता है, अपनी आत्मा के संशय और संघर्ष लिखता है, आपसे अपनी आपबीती कहकर अपने चित्त को शांत करना चाहता है,

आपसे अपील करके अपने उद्योगों के औचित्य पर राय लेना चाहता है....।⁹

वैसे हिंदी का आत्मकथा साहित्य २०० वर्ष पुराना माना जाता है। बनारसीदास जैन ने अपनी आत्मकथा 'अर्धकथानक' नाम से पद्यशैली और ब्रजभाषा में लिखी। यह हिंदी की सबसे पहली आत्मकथा मानी है। इसके बाद आत्मकथा का लगातार विकास होता रहा। स्वातंत्र्योत्तर युग में इसका बहुमुखी विकास हुआ। पुरुष लेखकों के साथ महिला लेखिकाएं भी इस क्षेत्र में अपने अभूतपूर्ण योगदान दे रही हैं। मराठी साहित्य के धरातल पर अब हिंदी साहित्य में भी दलित चेतना को लेकर दलित महिलाओं ने भी अपनी आत्मकथा लिखना प्रारंभ किया। दलित महिला की आत्मकथा में कौसल्या बैसंत्री का नाम विशेष उल्लेखनीय रहा है। "दोहरा अभिशाप" नामक अपनी आत्मकथा में उन्होंने अपने जीवन के त्रासद अनुभवों की अभिव्यक्ति दी है। सन १९६६ में परमेश्वरी प्रकाशन द्वारा प्रकाशित १२४ पृष्ठोंवाली इस आत्मकथा में लेखिका स्वयं दलित और अपनी मातृभाषा मराठी होते हुए भी उन्होंने हिंदी भाषा में लिखा है। हिंदी में ही क्यों लिखा इसका कारण लेखिकाने आत्मकथा की भूमिका में लिखा है कि- 'क्योंकि हिंदी में दलित महिलाओं के आत्मकथा साहित्य का अभाव है जिसकी शुरुआत में मैं भी हिस्सा होना चाहती हूँ।^३ लेखिका के पति उच्चशिक्षित, लेखक, भारत सरकार में उच्च पद पर सेवारत, स्वतंत्रता सेनानी होने पर भी उन्होंने कभी पत्नी का सम्मान नहीं किया। शारीरिक, आर्थिक, मानसिक शोषण के कारण चालीस वर्ष के बाद लेखिकाने पति के खिलाफ कोर्ट में केस दाखिल किया। उसके बाद उन्होंने अपने अनुभव लिखने का निश्चय किया। अपनी इस आत्मकथा को लेखिकाने 'अपना भोगा हुआ यथार्थ' कहते हुए इसे अपने माता-पिता को समर्पित किया है। महार जैसे अस्पृश्य जाति के होते हुए भी लेखिका के पिता रामा और माता भागेरथी ने गरीबी से जूझते समाज में फैले अंधविश्वास और जातीय प्रताड़नाओं से लड़ते हुए अपने सारे बच्चों को उच्चशिक्षित कर, उनमें आत्मविश्वास जगाकर स्वावलंबी जीवन जीने का रास्ता दिखाया।

पहले भारतीय समाज में नारी को शिक्षा ग्रहण करने का अधिकार भी नहीं था। उसका शिक्षित होना मानो पाप समझा जाता था। सवर्ण जाति की महिलाओं को भी इससे दूर, वंचित रखा जाता। दलित महिलाओं की स्थिति तो और भी दयनीय थी। अपनी इस आत्मकथा में कौसल्याजी ने पारिवारिक, सामाजिक, आर्थिक सारी बातों पर प्रकाश डाला है। शिक्षा प्राप्त करने हेतु उन्हें किन-किन समस्याओं का सामना करना पड़ा इसका लेखा-जोखा ही मानो उन्होंने अपनी आत्मकथा के जरिए बतलाया है। स्वतंत्रता पूर्व नारी शिक्षा की ओर इतना ध्यान नहीं दिया जाता। स्वतंत्रता के बाद महान समाज सुधारकों के कारण नारी की स्थिति और गति में परिवर्तन हुआ। नारी-शिक्षा को महत्व दिया गया। कौसल्या बैसंत्री को शिक्षा का महत्व अपनी मा भागेरथी के कारण ही समझ में आया। स्वतंत्रता पूर्व भागेरथी स्वयं अनपढ़ होने पर भी शिक्षा का महत्व जानती है और अपने सब बच्चों को पढ़ाने का निर्णय करती है। मां को पढ़े - लिखे और अच्छे लोगों के साथ संपर्क रखना अच्छा लगता था। कम उम्र में बड़ी बेटी की शादी होने पर शादी के बाद भी पढ़ाई का खर्चा देकर बेटी को पढ़ाना चाहती है। बाबा साहब आंबेडकर के विचारों से प्रभावित माता-पिता बिकट परिस्थिति में अपने जेवरों को बेचकर बच्चों को पढ़ाते हैं। बच्चों की फीस माफ करने के लिए स्कूल के हेडमास्टर से प्रार्थना करते हैं। बच्चे भी बिना नागा किये स्कूल जाते और बड़ी लगन से पढ़ते। अपनी पढ़ाई - लिखाई के संदर्भ में लेखिका लिखती है 'हमारी बस्ती में मैं पहली लड़की थी जिसने मैट्रिक पास किया और मेरी बहन का दूसरा नंबर रहा।'

दलित होकर भी भागेरथी अपने बच्चों को पढ़ा रही है यह देख उनके रिश्तेदार, बस्ती के लोग उनसे जलते, उपहास उड़ाते। लेखिका का साइकल पर कॉलेज जाना भी लोगों को अखरता है। मां बड़ी हिम्मतवाली और तेज बुद्धि की थी तो उन्होंने भी प्रौढ़ - शिक्षा के अंतर्गत पढ़ना - लिखना सीख लिया था। प्रौढ़ - शिक्षा की कक्षा अपने ही घर में रखती, दिया - बत्ती के केरोसीन का खर्चा भी वह स्वयं ही करती। स्वतंत्रता के पश्चात शिक्षा का प्रचार-प्रसार होने पर भी लोगों की मानसिकता में कोई बदलाव नहीं आता। भागेरथी बच्चों को न पढ़ाये इसके लिए उसे नाना तरह से सताने की कोशिश करते। घर के सामने गंदगी करते 'हमारे दरवाजे के पास लोग रात में टट्टी-पेशाब तक कर जाते थे, शरारत के तौर पर यह जतलाने के लिए कि हम क्यों पढ़ते हैं। मां बड़बड़ाती हुई टट्टी-पेशाब साफ करती, लेकिन उन्होंने हार नहीं मानी।'

लेखिका ने इस बात का भी जिक्र किया है कि बिहार में रहे उनके देवर और दो ननदों को बनारस आने पर उन्हें स्कूल में दाखिला नहीं मिल पाया, जिस कारण उनकी पढ़ाई अधूरी ही रह गयी।

लेखिका इस बात को स्वीकार करती है कि स्वाभिमानी और हिंमतवाली मां के कारण सब भाई-बहन उच्चशिक्षित बन अच्छे पद पर कार्यरत हैं। मां और पिता ने कभी लड़का-लड़की में भेद न करते उन्हें शिक्षा के लिए प्रेरित किया। इसी का नतीजा है कि लेखिका की पढ़ाई इंटरमीडीएट तक रही। बी.ए. में अंडमिशन ली थी पर पूरा नहीं कर पायी। लेखिका की बहनों में मधुने बी. ए., बी.एड. किया। पार्वतीने मैट्रिक पास कर टीचर ट्रेनिंग की, सबसे छोटी बहन अनुराधा पढ़ने में तेज थी उसे डॉक्टर बनना था पर आँखें कमजोर होने के कारण मैट्रिक होने पर हिंदी बिशारद और उसके आगे की परीक्षा पास की। बड़ी बहन ज्यादा पढ़ी-लिखी न होने पर भी उसने अपने बच्चों को उच्चशिक्षित बनाया। भाई इंजिनीअर बना। लेखिका के स्वयं के बच्चों भी उच्चशिक्षित बने।

इस प्रकार निष्कर्ष के रूप में हम यह कह सकते हैं कि स्वतंत्रता पूर्व और वह भी दलित समाज में शिक्षा को ज्यादा महत्व नहीं दिया जाता था। ऐसे समय में लेखिका की मां बाबा आंबेडकर के विचारों से प्रभावित होकर शिक्षा के महत्व को समझती है। बेटा-बेटी में फर्क न करते उन्हें उच्चशिक्षित करती है साथ ही प्रौढ़-शिक्षा के माध्यम से स्वयं के साथ समाज में की स्त्रियों को भी शिक्षित करती है। शिक्षा प्राप्ति के लिए उन्हें निरंतर संघर्ष करना पड़ा, लोगों की ताने सुननी पड़ी, यातनाओं को सहना पड़ा पर वह हिम्मत नहीं हारती और अपने बच्चों को स्वावलंबी बनाती है।

संदर्भ ग्रंथ :

१. बृहत् हिंदी कोश - सं. कालिका प्रसाद
२. आत्मकथा की संस्कृति - ले. पंकज चतुर्वेदी पृ. १४

३. दोहरा अभिशाप – कौसल्या बैसन्त्री, भूमिका से
४. वही पृ. ६८
५. वही पृ. २५

Publish Research Article

International Level Multidisciplinary Research Journal For All Subjects

Dear Sir/Mam,

We invite unpublished Research Paper, Summary of Research Project, Theses, Books and Book Review for publication, you will be pleased to know that our journals are

Associated and Indexed, India

- * International Scientific Journal Consortium
- * OPEN J-GATE

Associated and Indexed, USA

- EBSCO
- Index Copernicus
- Publication Index
- Academic Journal Database
- Contemporary Research Index
- Academic Paper Database
- Digital Journals Database
- Current Index to Scholarly Journals
- Elite Scientific Journal Archive
- Directory Of Academic Resources
- Scholar Journal Index
- Recent Science Index
- Scientific Resources Database
- Directory Of Research Journal Indexing

Golden Research Thoughts
258/34 Raviwar Peth Solapur-413005, Maharashtra
Contact-9595359435
E-Mail-ayisrj@yahoo.in/ayisrj2011@gmail.com
Website : www.aygrt.isrj.org